❍ 12 / 12 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∫∫ 1 ∫∫ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *परिवार वालों की सेवा की ?*

➢➢ *किसी भी देहधारी को याद तो नही किया ?*

➢➢ *यथार्थ सेवा द्वारा सेवा का प्रतक्ष्य फल खाया ?*

➢➢ *अपने हर कर्म द्वारा ब्रह्मा बाप को प्रतक्ष्य किया ?*

───────────────────────────

✧ ◦ ◦ ••☆••✧ ◦ ◦ ••☆••✧ ◦ ◦ ••☆••✧ ◦ ◦

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧ ◦ ◦ ••☆••✧ ◦ ◦ ••☆••✧ ◦ ◦ ••☆••✧ ◦ ◦

〰✧ *जैसे अन्य आत्माओ को सेवा की भावना से देखते हो, बोलते हो, वैसे निमित्त बने हुए लौकिक परिवार की आत्माओं को भी उसी प्रमाण चलाते रहो।* लौकिक में अलौकिक स्मृति, सदा सेवाधारी की, ट्रस्टीपन की स्मृति, सर्व प्रति आत्मिक भाव से शुभ कल्याण की, श्रेष्ठ बनाने की शुभ भावना रखो। *हद में नहीं आओ।*

✧ ◦ ◦ ••☆••✧ ◦ ◦ ••☆••✧ ◦ ◦ ••☆••✧ ◦ ◦

∫∫ 2 ∫∫ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂
✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं अतिन्द्रिय सुख के झूले में झुलने वाली आत्मा हूँ"*

〰✧ सदा अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलते रहते हो? बापदादा के सिकीलधे बच्चे हो। तो सिकीलधे बच्चों को माँ बाप सदा ऐसे स्थान पर बिठाते हैं, जहाँ कोई भी तकलीफ न हो। *बाप-दादा ने आप सिकीलधे बच्चों को कौन सा स्थान बैठने के लिए दिया है? दिलतख्त।* कितना बड़ा है। इस तख्त पर बैठकर जो चाहो वह कर सकते हो, तो सदा तख्तनशीन रहो। नीचे नहीं आओ।

〰✧ जैसे फारेन में जहाँ-तहाँ गलीचे लगा देते हैं कि मिट्टी न लगे। *बापदादा भी कहते हैं देहभान की मिट्टी में मैले न हो जाए इसलिए सदा दिल तख्तनशीन रहो।* जो अभी तख्तनशीन होंगे वही भविष्य में भी तख्तनशीन बनेंगे। तो चेक करो कि सदा तख्तनशीन रहते हैं या उतरते चढ़ते हैं?

〰✧ तख्त पर बैठने के अधिकारी भी कौन बनते? जो सदा डबल लाइट रूप में रहते हैं। *अगर जरा भी भारीपन आया तो तख्त से नीचे आ जायेंगें। तख्त से नीचे आये तो माया से सामना करना पड़ेगा। तख्तनशीन हैं तो माया नमस्कार करेगी।* बापदादा द्वारा बुद्धि के लिए जो रोज शक्तिशाली भोजन मिलता है। उसे हजम करते रहो तो कभी भी कमजोरी आ नहीं सकती। माया का वार हो नहीं सकता।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ सभी को फील हो कि बस हमको भी अभी वैराग्य वृति में जाना है। अच्छा समझा क्या करना है? सहज है या मुश्किल है? थोडा-थोडा आकर्षण तो होगी या नहीं? साधन अपने तरफ नहीं खींचेंगे? *अभी अभ्यास चाहिए - जब चाहे, जहाँ चाहे, जैसा चाहिए - वहाँ स्थिति को सेकण्ड में सेट कर सके।*

〰✧ सेवा में आना है तो सेवा में आये। सेवा से न्यारे हो जाना है तो न्यारे हो जाएँ। ऐसे नहीं, सेवा हमको खींचे। सेवा के बिना रह नहीं सके। *जब चाहें, जैसे चाहें, विल पॉवर चाहिए।* विल पॉवर है? स्टॉप तो स्टॉप हो जाए।

〰✧ *ऐसे नहीं लगाओ स्टॉप और हो जाए क्वेचन मार्क।* फुलस्टॉप स्टॉप भी नहीं फुलस्टॉप जो चाहे वह प्रैक्टिकल में कर सकें। चाहते हैं लेकिन होना मुश्किल है तो इसको क्या कहेंगे? विल पॉवर है कि पॉवर है? संकल्प किया - व्यर्थ समाप्त, तो सकण्ड में समाप्त हो जाए।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *जैसे बाप चारों ओर चक्कर लगाते हैं वैसे आप भी भक्तों के चारों ओर चक्कर लगाती हो? कभी सैर करने जाती हो? आवाज़ सुनने में आती है, तो कशिश नहीं होती है?* बाप के साथ-साथ शक्तियों को भी पार्ट बजाना है। *जैसे शक्तियों का गायन है कि अन्त:वाहक शरीर द्वारा चक्कर लगाती थीं, वैसे बाप भी अव्यक्त रूप में चक्कर लगाते हैं। अन्त:वाहक अर्थात् अव्यक्त फ़रिश्ते रूप में सैर करना।* यह भी प्रैक्टिस चाहिए और यह अनुभव होंगे।

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- बाप भल सम्मुख हैं लेकिन याद शांतिधाम घर में करना है"*

➳ ➳ *सम्मख साकार मिलन की वो सखद सी स्मतियाँ. जब सामने बैठ

जाते वो आकर, और वो समय का उडनछू हो जाना, भर- भर कर छल-छलाता रहा, प्रेम मधु का पैमाना इन्हीं मुलाकातों में, बातों बातों में, परिवर्तन का महामन्त्र बखूबी पढा दिया शिव प्रियतम ने मुझ आत्मा को, और स्वपरिवर्तन से विश्व परिवर्तन के महामन्त्र को बडी ही सहजता से आत्मसात् कर बैठी मैं आत्मा ...* बदलता ऋतु चक्र, वो दिन-रात का परिवर्तन, मायूस सी पतझर कही, कही पर वसन्त का नर्तन, और इसी सब से शिव प्रियतम ने सहज ही इशारा कर दिया कि... बच्चे बाप भल सम्मुख है लेकिन याद शान्ति धाम घर में ही करना है... शान्तिधाम घर में याद करने के पीछे विकर्म विनाश के साथ और भी क्या क्या रहस्य है, इन पर गहराई से मनन करती मैं आत्मा पहुँच गयी हूँ सुक्ष्म वतन में... सुनहरें बादलों की बन्दनवार से सजा सूक्ष्म वतन... और सुनहरे कमल पर आसीन बापदादा... प्रवेश करते ही मैं आत्मा भी सुनहरे रंग में रंग गयी हूँ...

❊ *गहरी जिज्ञासा से भरी मेरी निश्छल सी आँखों को देखकर जानीजाननहार शिवबाबा बोले :-* "मीठी बच्ची... *ड्रामा का गहन राज बुद्धि में समाकर दिव्य बुद्धि बनी हो आप, ड्रामा में बन्धायमान बाप के पार्ट को भी बखूबी जाना है* आप बच्ची ने, साकार सम्मुख मिलन की पालना का मीठा एहसास पाया है आपने, अब यही पालना, स्नेह से वंचित हर आत्मा को भी देनी है, क्या इतना भरपूर किया है खुद को आपने... ?"

➳ _ ➳ *रोम रोम में आभार समायें, वरदानी दृष्टि से भरपूर करने वाले मीठे बाबा को स्नेह से निहारती मैं आत्मा कहती हूँ:-* "मेरे मीठे बाबा... *प्यार के सागर को मन की गागर में समाँ लिया है मुझ आत्मा ने अब स्नेह की बदरी बन बरस रही हूँ इस मरूभूमि पर...* देखिए बाबा, लहरा उठी है ये मरूभूमि! काँटो का ये जंगल खुशनुमा गुलाबों में बदल रहा है... आप का वरदानी हाथ करामात दिखा रहा है..."

❊ *गुलाबों के उपवन से चुनकर संग लाये कुछ गुलाबों की ओर मीठी दृष्टि डालकर मेरे मीठे बाबा मुझ आत्मा से बोले:-* "मेरी रूहे गुलाब बच्ची... *अब बिन्दु बाप से, बिन्दु बन अपने घर परमधाम में मिलन मना कर्मातीत अवस्था को पाओं. डामा में पल पल बदलते मेरे भी अभिनय को निश्चय से देखों और

साकार के सफर की निराकार सी मंजिल को पाओं...* तेजी से घूमते क्र के साथ स्वदर्शन चक्र घुमाओं..."

➳ _ ➳ *फरिश्ता रूप से बिन्दु रूप में सिमटते शिवबाबा को देखकर मैं आत्मा कहती हूँ:-* "मेरे बिन्दु बाबा... तीनो बिन्दुओं का राज बखूबी समझा है मैने, समय का इशारा और शान्ति धाम की वो बीजरूप स्थिति सब का गहरा अनुभव पा मालामाल हो गयी हूँ मैं आत्मा, शान्ति धाम में वो आपकी किरणों से खेलना, खेल खेल में जन्मों के विकर्मों का स्वाह कर देना, उन अनुभवों के खजाने से मालामाल हुई हूँ मैं आत्मा... *उस खजाने से मैं सबको मालामाल कर रही हूँ..."*

❇ *गहरे विश्वास और निश्चिन्तता से भरी बाबा की आँखें मुझ आत्मा से कह रही है:-* "मीठी बच्ची... साकार सम्मुख मिलन की सीमाओं से परे हर वक्त मिलन मनाने की सौगात है ये अव्यक्त मिलन... जब चाहों तब शान्तिधाम में आ जाओं और बापदादा से शक्तियां और वरदानों की सौगात पा जाओं... *निश्चय के फलक पर विराजमान रह, बाप समान दूसरों को प्रत्यक्ष कर स्वयं साक्षी हो जाओ..."*

➳ _ ➳ *शान्ति धाम की असीम शान्ति की कशिश को महसूस करती मैं आत्मा ब्रह्मा बाबा की भृकुटी में ही शिवबाबा को प्रत्यक्ष निहारती हुई कहती हूँ:-* "मीठे बाबा... *हर पल करवट बदलता ये ड्रामा, और ड्रामा में पल- पल बदलता आपका अभिनय... स्वयं को बदलने की ही सीख दे रहा है, और ड्रामा का सार मैने पा लिया है* मेरे मीठे बाबा... बिन्दु बन बिन्दु बाप को याद करने मैं चली अपने वतन, शान्ति धाम... और बाबा मुस्कुरा रहें है, मेरी सार बुद्धि को देखकर, कम्बाइन्ड स्वरूप की स्मृति को गहराई से महसूस करती, मैं आत्मा उड चली शान्ति धाम की ओर..."

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- सुहावने संगम युग पर जीते जी पारलौकिक बाप का बनना है*"

➳ _ ➳ जिस पारलौकिक भगवान बाप की एक झलक पाने के लिए अनेक जप, तप, यज्ञ, पूजा पाठ आदि किए। शरीर को कष्ट दे कर भी पैदल लम्बी - लम्बी यात्रायें की। मन्दिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों में जा कर माथे टेक कर टिप्पड़ घिसाये किन्तु फिर भी हर पल उससे दूर रहे। *वो पारलौकिक भगवान बाप अब संगमयुग पर अपने बच्चों से मिलन मनाने, उनकी हर आश पूरी करने के लिए उनके सम्मुख आया है। तो ऐसे सुहावने संगमयुग पर जीते जी उस पारलौकिक बाप का बन कर उस हर वायदे को पूरा करना है जो भक्ति में कहते आये कि जब आप आयेंगे तो हम आप पर बलिहार जायेंगे*।

➳ _ ➳ वो भगवान बाप जिसके दर्शन मात्र की ये अंखिया प्यासी थी वो ऐसे अति साधारण वेश में अपने बच्चों के सम्मुख आकर बाप बन उनकी पालना करेगा, टीचर बन स्वयं उन्हें पढ़ायेगा और सतगुरु बन उनकी जीवन नैया को पार लगाएगा यह तो कभी स्वप्न में भी नही सोचा था। *स्वयं से बातें करती अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य की उन मधुर स्मृतियों में मैं खो जाती हूँ जब पहली बार परमात्म पालना, परमात्म प्रेम का अनुभव किया था और मन ने कहा था कि यही है जिसकी तलाश में मैं जन्म - जन्म से भटक रही थी*। यही है वो शान्ति, सुख, प्रेम और आनन्द का सागर मेरा पारलौकिक बाप जो मेरे जीवन को खुशहाल करने आ गया है।

➳ _ ➳ अपने पारलौकिक बाप से किये हुए उस पहले मधुर मिलन की स्मृति मन मे एक रूहानी नशे का संचार कर रही है और मन उनसे मिलने की लगन में मग्न हो कर उनके पास जाने के लिए बेकाबू हो रहा है। *ऐसा लग रहा है जैसे मेरे पारलौकिक शिव पिता भी प्रीत की रीत निभाने के लिए परमधाम से नीचे मेरे पास आ रहें हैं। फिजाओं में उनके आने की आहट मैं स्पष्ट अनुभव कर रही हूँ*। उनकी सर्वशक्तियों की किरणों को अपने चारों और फैलता हुआ मैं देख रही हूँ। उनकी सर्वशक्तियों रूपी किरणो की शीतल छाया मुझे उनकी उपस्थिति का अनुभव करवा रही है।

➳ _ ➳ अपने पास अपने शिव पिता को पाकर मैं आत्मा दिव्य अलौकिक रूहानी मस्ती में डूबी अब उनकी किरणो रूपी बाहों में समा कर उनके साथ जा रही हूँ। *अपनी किरणों के बाहों के झूले में झुलाते मेरे पारलौकिक बाबा मुझ पर अपना असीम स्नेह लुटाते, इस दुखदाई दुनिया के हर दुख से दूर शान्ति की दुनिया अपने घर शान्तिधाम में ले कर जा रहें हैं*। प्रकृति के पाँच तत्वों से निर्मित स्थूल जगत को पार कर, अंतरिक्ष से परें, सूक्ष्म लोक से भी ऊपर अपने परमधाम घर मे मैं आत्मा बाबा के साथ पहुंच गई हूँ।

➳ _ ➳ वाणी से परे इस निर्वाणधाम घर मे फैली अथाह शान्ति मन को गहन शान्ति की अनुभूति करवा रही है। *शान्ति की अति शीतल लहरे, शान्ति के सागर मेरे पारलौकिक शिव पिता से बार - बार मेरी ओर आ रही हैं और मुझे गहन शांन्तमयी स्थिति में स्थित कर रही हैं*। अपने शिव पिता से आ रही सर्वगुणों की सतरंगी किरणो के झरने के नीचे बैठी मैं आत्मा उन्हें स्वयं में भर कर सर्वगुण सम्पन्न बन रही हूँ। *अपनी सर्वशक्तियों, सर्व खजानों से बाबा मेरी बुद्धि रूपी झोली को भरकर मुझे दुनिया की सबसे धनवान आत्मा बना रहे हैं*।

➳ _ ➳ बाबा के साथ अटैच हो कर उनसे आ रही लाइट, माइट से मैं स्वयं को भरपूर कर रही हूं। उनसे आ रही सर्वशक्तियाँ मुझमे असीम बल भर कर मुझे शक्तिशाली बना रही है। *मैं डबल लाइट बनती जा रही हूँ। कोई बोझ, कोई बंधन नही। बिल्कुल उन्मुक्त और निर्बन्धन स्थिति में मैं स्थित हूँ*। गहन सुखमय स्थिति की अनुभूति अपने शिव पिता परमात्मा के सानिध्य में मैं कर रही हूं। बाबा की लाइट माइट से भरपूर हो कर डबल लाइट बन कर अब मैं वापिस लौट रही हूँ। *अपने ब्राह्मण स्वरुप में स्थित हो कर, इस सुहावने संगमयुग पर जीते जी पारलौकिक बाप का बन कर, सदा अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति करते हुए अपने संगमयुगी ब्राह्मण जीवन का मैं भरपूर आनन्द ले रही हूँ*।

|| 8 || श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)

(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं यथार्थ सेवा द्वारा सेवा का प्रत्यक्ष फल खाने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं मन-बुद्धि से सदा तन्दरुस्त आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा अपने हर कर्म द्वारा ब्रह्मा बाप के कर्म को प्रत्यक्ष करती हूँ ।*
✺ *मैं कर्मयोगी हूँ ।*
✺ *मैं श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ *ऐसा कभी भी नहीं सुना होगा कि बाप का जन्म-दिन भी वही और बच्चों का भी जन्म-दिवस वही। यह न्यारा और प्यारा अलौकिक हीरे तुल्य जन्म आज आप मना रहे हो।* साथ-साथ सभी को यह भी न्यारा और प्यारा-पन स्मति में है कि *यह अलौकिक जन्म ऐसा विचित्र है जो स्वयं भगवान

बाप बच्चों का मना रहे हैं। परम आत्मा बच्चों का, श्रेष्ठ आत्माओं का जन्म-दिवस मना रहे हैं।* दुनिया में कहने मात्र कई लोग कहते हैं कि हमको पैदा करने वाला भगवान है, परम-आत्मा है। परन्तु न जानते हैं, न उसी स्मृति में चलते हैं। आप सभी अनुभव से कहते हो - हम परमात्म-वंशी हैं, ब्रह्मा-वंशी हैं। *परम आत्मा हमारा जन्म-दिवस मनाते हैं। हम परमात्मा का जन्म-दिवस मनाते हैं।*

✺ *ड्रिल :- "परमात्मा द्वारा अपना अलौकिक जन्म दिवस मनाने का अनुभव"*

➳ _ ➳ *वाह मैं पद्मापदम भाग्यशाली आत्मा... जो स्वयं भाग्य विधाता परमात्मा... मेरा जन्म-दिवस मनाते हैं... ऐसा भाग्य मुझ आत्मा को सिर्फ... संगमयुग पर ही प्राप्त होता है...* इस संगम युग पर बाबा अकेले नहीं आते हैं... बच्चों के साथ ही आते हैं... क्यूँकि बाबा इस संगम युग पर... यज्ञ रचते हैं... और यज्ञ में ब्राह्मण आहूति डालते हैं... और हम बच्चें वही कल्प वाले ब्राह्मण है... *वाह मैं आत्मा अपना अलौकिक जन्म-दिवस... स्वयं परमात्मा के साथ मना रही हूँ... यह जयंती सब जयंतियों से वंडरफुल है... सारे कल्प में... यही एक जयंती है... जो बाप और बच्चों का साथ में जन्म होता है... इसलिए इस जयंती को हीरे तुल्य कहा गया है...*

➳ _ ➳ *मुझ आत्मा के इस अलौकिक जन्म-दिवस पर... परमात्मा मुझ आत्मा को मुबारक देते हैं... और मैं आत्मा अपने परमपिता को मुबारक देती हूँ...* बाबा ने कहा है... बच्चे साथ रहेंगे... साथ उड़ेंगे... साथ आएंगे और... ब्रह्मा बाप के साथ राज्य करेंगे... साथ रहने का वादा है... मैं आत्मा भी कहती हूँ... *जहां बाप वहाँ साथ - साथ रहूँगी... यह है मुझ आत्मा का बाप से वादा... और बाप का मुझ आत्मा से वादा... शरीर द्वारा कही भी रहूँ... लेकिन दिल में सदा दिलाराम बाप साथ है...*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा सदा बाबा के साथ-साथ ही रहती हूँ... अकेले कभी नहीं रहती हूँ... क्योंकि अकेले रहने से माया अपना चांस ले लेगी... और साथ रहने से लाइट - हाउस के आगे माया स्वतः ही भाग जाती है... मझ आत्मा के

नजदीक भी नहीं आती है...* इसीलिए मैं आत्मा सदा बाबा के साथ रहने का वादा निभा रही हूँ... और बाबा भी सदा मेरे साथ रहकर अपना वादा निभा रहे हैं...

➳ _ ➳ *ऐसा कभी भी किसी ने भी नहीं सुना होगा कि... बाप का जन्म-दिन भी वही... और बच्चों का भी जन्म-दिवस वही... यह न्यारा और प्यारा अलौकिक हीरे तुल्य जन्म आज हम बच्चे मना रहे है...* मुझ आत्मा को... यह जन्म-दिवस न्यारा... और प्यारा-पन अनुभव करा रहा है... *यह अलौकिक जन्म ऐसा विचित्र है... जो स्वयं भगवान बाप... बच्चों का मना रहे हैं...* परम आत्मा बच्चों का... श्रेष्ठ आत्माओं का जन्म-दिवस मना रहे हैं... दुनिया में सभी आत्माएँ... कहने मात्र कहती हैं कि... हमको पैदा करने वाला भगवान है... परम-आत्मा है... परन्तु न उनको जानते हैं... न उनकी स्मृति में चलते हैं... *हम सभी बाप के बच्चें... अनुभव से कहते है - हम परमात्म-वंशी हैं... ब्रह्मा-वंशी हैं... परम आत्मा हमारा जन्म-दिवस मनाते हैं... हम परमात्मा का जन्म-दिवस मनाते हैं...*

➳ _ ➳ आज मैं आत्मा अपना जन्म-दिवस... और परमात्मा बाप का जन्म-दिवस साथ-साथ मना रही हूँ... मैं बाप का बर्थडे मना रही हूँ... और बाप मुझ आत्मा का बर्थडे मना रहे हैं... *मैं आत्मा बाप को मुबारक देती हूँ... वाह बाबा वाह... और बाप मुझ आत्मा को मुबारक देते हैं... वाह बच्चे वाह...* आज इस अलौकिक और अनोखे... बाप और बच्चों के जन्म दिवस पर... *मैं आत्मा बाप के सामने... यह संकल्प लेती हूँ कि... सदा एक दो को उमंग - उत्साह दिलाते हुए... सहयोगी बनूँगी... अपने व्यर्थ संकल्पों के अक के फूल बाप को अर्पण करती हूँ...* अब मैं आत्मा व्यर्थ संकल्प न करती हूँ... न सुनती हूँ... और न संग में आकर... व्यर्थ संकल्पों के संग का रंग लगाती हूँ... क्योंकि *जहाँ व्यर्थ संकल्प होगा... वहाँ याद का संकल्प... ज्ञान के मधुर बोल... जिसको मुरली कहते हैं... वह शुध्द संकल्प स्मृति में नहीं रहेंगे...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔